

19 जून 2024, गोरखपुर।

गोरखनाथ मन्दिर स्थित महायोगी गुरु गोरखनाथ योग संस्थान एवं महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् गोरखपुर द्वारा आयोजित साप्ताहिक योग शिविर एवं शैक्षिक कार्यशाला में "अष्टांग योग " विषय पर मुख्यवक्ता के रूप में गुरु श्री गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेस के योगाचार्य डॉ० परीक्षित देवनाथ ने कहा कि योग एक ऐसा साधन है जो मनुष्य के तन और मन को शक्ति प्रदान करके उसके लोक और परलोक में सामंजस्य बिठाता है। इस लौकिक जगत में मनुष्य निरन्तर संघर्षरत रहता है और परमशक्ति को जानने के प्रयास में जीवन बिता देता है।

उन्होंने कहा कि योग के अभ्यास से मनुष्य आध्यात्मिक एवं शारीरिक संपूर्णता की ओर अग्रसर होता है। यही कारण है कि आज विश्व के तमाम धर्मों और मतों के अनुयायी योग के महत्व को मान्यता दे रहे हैं।

उन्होंने कहा कि अष्टांग योग के अभ्यास से जैसे-जैसे मन और बुद्धि से मल, विक्षेप और आवरण हटते जाते हैं, वैसे-वैसे आध्यात्मिक आलोक की उपलब्धि प्राप्त होती जाती है। आध्यात्मिक उन्नति की सबसे बड़ी बाधा अविद्या है। अविद्या से अस्मिता, अस्मिता से राग, राग से द्वेष और द्वेष से अभिनिवेश, से सकाम कर्म, उनकी वासनाओं से जन्म, आयु, भोग एवं सकाम कर्मों के पाप-पुण्य के आधार पर सुख-दुःख आदि प्राप्त होते हैं। उन समस्त विकारों की निवृत्ति हेतु महर्षि पतंजलि ने अष्टांग योग को प्रमुख साधन माना है।

विशिष्ट वक्ता संस्कृत विद्यापीठ के प्राचार्य डॉ० अरविन्द कुमार चतुर्वेदी ने कहा कि अष्टांग योग में जीवन के सामान्य व्यवहार से लेकर ध्यान एवं समाधि-सहित अध्यात्म की उच्चतम अवस्थाओं तक का अनुपम समावेश है। जो भी व्यक्ति अपने अस्तित्व की खोज में लगा है तथा जीवन के पूर्ण सत्य को परिचित होना चाहता है, उसे अष्टांग योग का अवश्य ही पालन करना चाहिए। यम और नियम अष्टांग योग के मूल आधार हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता गोरखनाथ मन्दिर के प्रधान

पुजारी योगी कमलनाथ जी महाराज ने की। कार्यक्रम का संचालन श्री गोरखनाथ संस्कृत विद्यापीठ व्याकरण विभागाध्यक्ष डॉ० अभिषेक पाण्डेय ने किया।

इस अवसर पर योगाचार्य कमलेश मौर्या व नवनीत महात्मा, आचार्य बृजेश मणि मिश्र, डॉ० दिग्विजय शुक्ल, डॉ० रोहित कुमार मिश्र, डॉ० प्रांगेश कुमार मिश्र, पुरुषोत्तम चौबे, दीपनारायण, नित्यानन्द सहित अनेकों योग प्रशिक्षु उपस्थित रहे।